CORDOVA® App 24X7 For Teachers Only

FREE SMART CLASS SOFTWARE WITH WEB SUPPORT For Teachers Only

सुगम हिंदी व्याकरण

CORDOVA®

Scanned with CamScanner

विषय-सूची (Contents)

विषय		पृष्ठ संख्या
1.	भाषा, लिपि और व्याकरण (Language, Script and Grammar)	5
2.	वर्ण-विचार (Orthography/Phonology)	13
3.	संधि (Joining)	20
4.	शब्द-विचार (Morphology)	27
5.	पर्यायवाची शब्द (Synonyms)	35
6.	विलोम शब्द (Antonyms)	38
7.	अनेक शब्दों के लिए एक शब्द (One Word Substitution)	42
8.	समरूपी भिन्नार्थक शब्द (Paironyms)	46
9.	अनेकार्थक शब्द (Homonyms)	49
10.	समान अर्थ प्रतीत होने वाले शब्द (Words Apparently Similar In Meaning)	52
11.	कुछ अन्य जानकारियाँ (Some Other Information)	55
12.	उपसर्ग (Prefix)	56
13.	प्रत्यय (Suffix)	60
14.	समास (Compound)	66
15.	संज्ञा (Noun)	72
16.	लिंग (Gender)	78
17.	वचन (Number)	85
18.	कारक (Case)	91
19.	सर्वनाम (Pronoun)	100
20.	विशेषण (Adjective)	109
21.	क्रिया (Verb)	118
22.	काल (Tense)	126
	विशेष गतिविधि (खेल-खेल में) (Fun Activity)	133
23.	अविकारी शब्द (अव्यय) (Indeclinable Words)	134
	क्रियाविशेषण (Adverb)	134
	संबंधबोधक (Preposition)	139
	समुच्चयबोधक (योजक) (Conjunction)	142
	विस्मयादिबोधक (Interjection)	144
24.	वाक्य-रचना (Syntax)	147
25.	वाच्य (Voice)	154
26.	शब्द एवं वाक्य अशुद्धिशोधन (Correction of Words and Sentences)	159
27.	विराम-चिह्न (Punctuation Marks)	164
28.	मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ (Idioms and Proverbs)	168
29.	मौखिक अभिव्यक्ति (Oral Expression)	176
30.	दैनंदिनी (डायरी) लेखन (Diary Writing)	179
31.	श्रुतभाव-ग्रहण (Listening Comprehension)	181
32.	सूचना-लेखन (Notice Writing)	182
33.	विज्ञापन-लेखन (Advertisement Writing)	184
34.	प्रतिवेदन-लेखन (Report Writing)	186
35.	संवाद-लेखन (Dialogue Writing)	187
36.	चित्र-वर्णन (Picture Description)	189
37.	कहानी-लेखन (Story Writing)	191
38.	पत्र-लेखन (Letter Writing)	194
39.	अनुच्छेद-लेखन (Paragraph Writing)	199
40.	निबंध-लेखन (Essay Writing)	202
41.	अपठित गद्यांश (Unseen Passage)	208
42.	अपठित पद्यांश (Unseen Extract)	212
	परिभाषाएँ (Definitions)	215
	श्रुतभाव-पाठ (Listening Text)	217
	रचनात्मक गतिविधि-I-II	218-219
	अभ्यास प्रश्न-पत्र-I	220-221
	रचनात्मक गतिविधि-III-IV	222
	अभ्यास प्रश्न-पत्र-II	223-224

Scanned with CamScanner

1 भाषा, लिपि और व्याकरण
(Language, Script and Grammar)

देखिए, पढ़िए और समझिए–

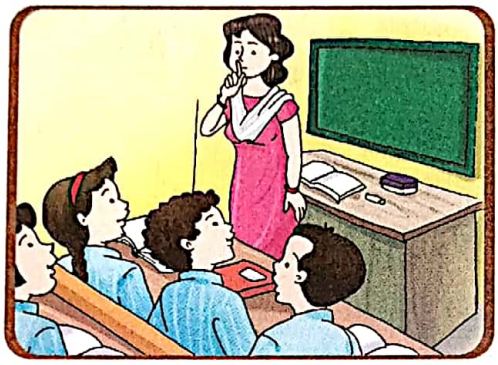

उपर्युक्त चित्रों में दिखाए गए संकेतों के माध्यम से आप समझ गए होंगे कि–

1. हरी बत्ती चलने का संकेत दे रही है।
2. अध्यापिका विद्यार्थियों से शांत बैठने के लिए संकेत कर रही हैं।
3. नन्हा बालक माँ को बुलाने का संकेत कर रहा है।

संकेतों के माध्यम से कुछ बातें कही जाती हैं, लेकिन सभी बातें संकेतों में नहीं कही जा सकतीं। कई बार संकेतों से बातें स्पष्ट नहीं हो पाती। अतः अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए बोलना अथवा लिखना आवश्यक है।

'भाषा' शब्द भाष् धातु से बना है। जिसका अर्थ है– बोलना। टी०वी० सीरियल, फ़िल्म आदि में कलाकार बोलकर समझाते हैं और हम सुनकर समझ जाते हैं। समाचार-पत्र में लिखकर समाचार प्रकट करते हैं और हम पढ़कर समाचार समझते हैं। यही तो **भाषा** है।

अतः हम कह सकते हैं कि–

जिस साधन से हम अपने विचार बोलकर या लिखकर प्रकट करते हैं तथा दूसरों के विचारों को सुनकर या पढ़कर समझते हैं, वह साधन ही भाषा है।

इसी आधार पर भाषा के दो रूप माने जाते हैं–

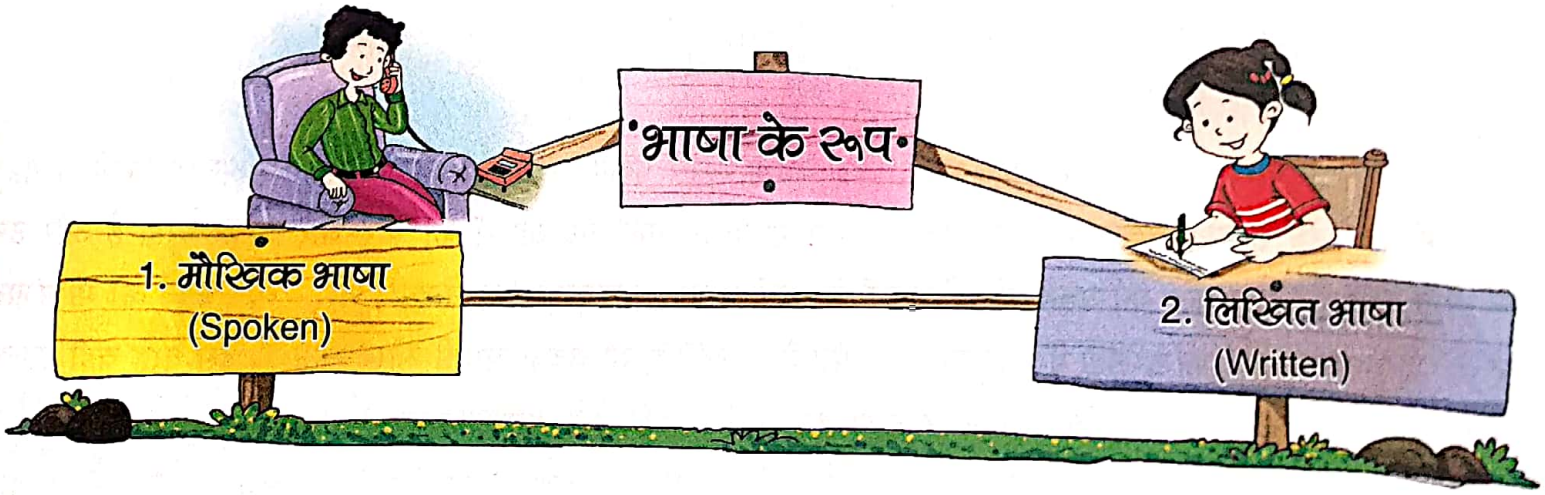

Scanned with CamScanner

1. मौखिक भाषा– जब मन के भावों अथवा विचारों को बोलकर प्रकट करते हैं तथा सुनकर समझते हैं, तो उसे **मौखिक भाषा** कहते हैं; जैसे–

इस बातचीत में माँ-बेटे **बोलकर** एक-दूसरे को अपनी बातें समझा रहे हैं तथा एक-दूसरे की बातों को **सुनकर** समझ रहे हैं। यह भाषा का **मौखिक रूप** है।

2. लिखित भाषा– जब मन के भावों तथा विचारों को लिखकर प्रकट करते हैं तथा पढ़कर समझते हैं, तो उसे **लिखित** भाषा कहते हैं; जैसे–

श्याम ने पिकनिक पर ले जाने वाले सामानों की सूची **लिखकर** माँ को दी और माँ ने उस सूची को **पढ़कर** श्याम की ज़रूरतों को जाना।

अब आप समझ गए होंगे कि श्याम ने लिखकर अपने भावों व विचारों को प्रकट किया और माँ ने श्याम के भावों व विचारों को **पढ़कर** समझा। यही भाषा का **लिखित रूप** है।

हम कह सकते हैं कि–

भाषा आदान-प्रदान का उत्तम साधन है।

मातृभाषा– मातृभाषा से तात्पर्य उस भाषा से है, जिसे बच्चा सबसे पहले अपनी माँ और परिवार के अन्य सदस्यों से ग्रहण करता है। माँ बच्चे के सबसे नज़दीक होती है। बच्चा अपनी माँ द्वारा बोले गए अक्षरों को धीरे-धीरे ग्रहण करता है और उन्हें बोलना सीख जाता है। जिस भाषा को बच्चे की माँ बोलती है, उसी भाषा को बच्चा सीख लेता है; जैसे– यदि बच्चे की माँ पंजाबी बोलती हैं, तो बच्चा पंजाबी सीख लेता है और यदि वह मराठी बोलती हैं, तो बच्चा मराठी सीख लेता है। इस तरह वही उसकी मातृभाषा बन जाती है। अतः वह भाषा जिसे बच्चा अपने परिवार से सीखता है, उसे **मातृभाषा** कहते हैं।

Scanned with CamScanner

राष्ट्रभाषा– जिस भाषा का प्रयोग देश के अधिकतर निवासी करते हैं, उसे **राष्ट्रभाषा** कहते हैं; जैसे– भारत में हिंदी, अमेरिका में अंग्रेज़ी आदि।

विशेष हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अंतर्गत 14 सितंबर, 1949 को मिला था। अतः भारत में हर वर्ष 14 सितंबर हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

राजभाषा– जो भाषा देश के कार्यालयों और राज-काज के कार्यों में प्रयोग की जाती है, उसे **राजभाषा** कहते हैं; जैसे–भारत की राजभाषा हिंदी और अंग्रेज़ी है।

बोली (Dialect)– बोली का अभिप्राय स्थानीय तथा घरेलू बोली से है। यह किसी स्थान विशेष में अपनाई जाती है तथा इसका क्षेत्र सीमित होता है। इसका अपना कोई लिखित साहित्य नहीं होता। लोकगीत, लोककथाएँ आदि ही इसको समृद्ध बनाते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि–

भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं।

जैसे–

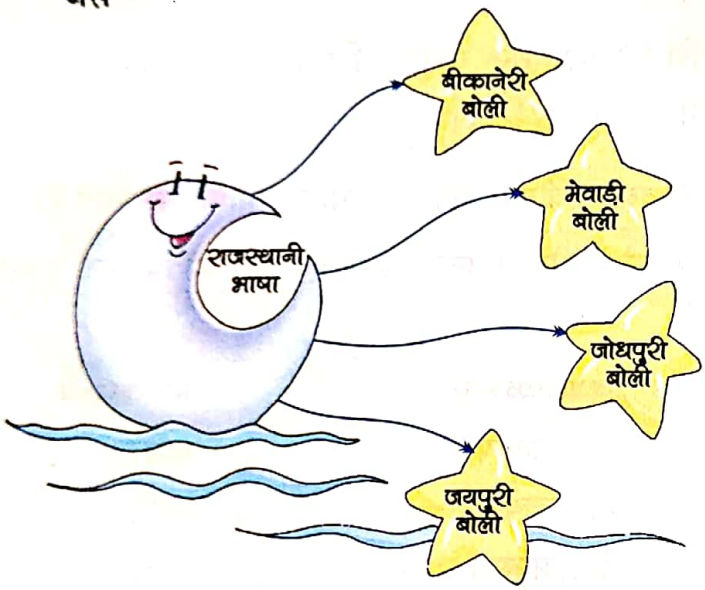

अब आप दिए गए उदाहरण की तरह कोई एक भाषा तथा उनकी बोलियाँ पता लगाकर लिखिए–

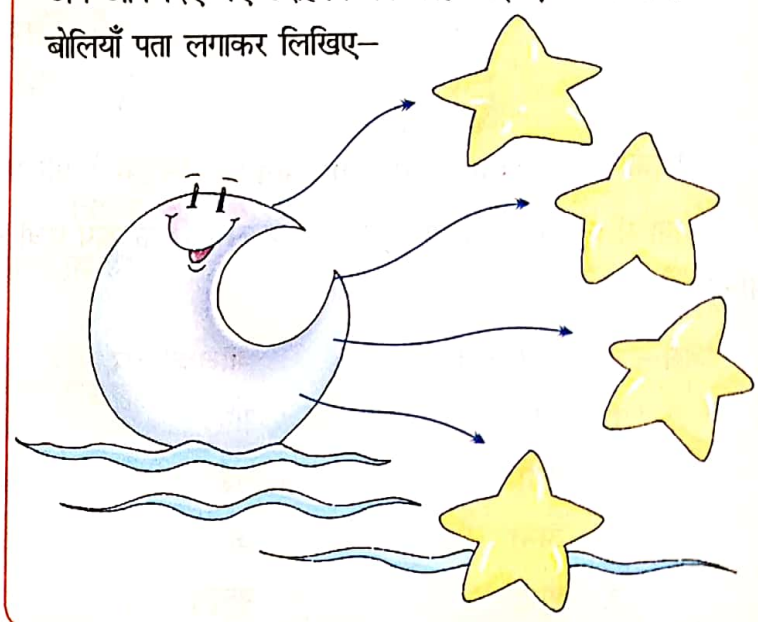

भाषा और बोली में अंतर–

1. भाषा का क्षेत्र व्यापक होता है, जबकि बोली एक सीमित क्षेत्र में ही प्रयोग में लाई जाती है।

2. भाषा का अपना लिखित साहित्य और व्याकरण होता है, जबकि बोली केवल उच्चारण तक सीमित होती है। बोली में व्याकरण एवं सिद्धांतों को महत्त्व न देकर कहावतों, लोकगीतों एवं लोक कथाओं को अधिक महत्त्व दिया जाता है।

विशेष भारतीय संविधान में 22 भाषाएँ मान्यता प्राप्त हैं; जैसे–हिंदी, संस्कृत, बंगाली, असमिया, मणिपुरी, मराठी, मलयालम, मैथिली, कोंकणी, कश्मीरी, कन्नड़, गुजराती, नेपाली, उर्दू, बोडो, डोगरी, तेलुगू, तमिल, सिंधी, संथाली, पंजाबी और ओडिया।

लिपि (Script)

अपने भावों एवं विचारों को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने और स्थायी रूप प्रदान करने के लिए मनुष्य ने लिखने के ढंग (लिपि) का विकास किया। इसी के माध्यम से वेद, पुराण आदि के ज्ञान को सुरक्षित रखा गया। साहित्य रचना होने लगी और लोग सैद्धांतिक ज्ञान को सुरक्षित रखने लगे।

Scanned with CamScanner

प्रत्येक भाषा में हर ध्वनि के लिए एक निर्धारित चिह्न होता है। इन्हीं चिह्नों के माध्यम से मौखिक भाषा को लिखित रूप दिया जाता है। इसी निश्चित चिह्न व्यवस्था को **लिपि** कहा जाता है। प्रत्येक भाषा में जिस तरह कुछ वस्तुओं की पहचान, उनके अलग-अलग नामों से हैं, उसी तरह प्रत्येक भाषा अलग-अलग लिपि में लिखी जाती है; जैसे– हिंदी भाषा को **देवनागरी** लिपि में लिखा जाता है। ऐसे ही हर भाषा की अपनी लिपि होती है–

भाषा	लिपि	भाषा	लिपि
1. संस्कृत, हिंदी	देवनागरी	2. अंग्रेज़ी	रोमन
3. उर्दू	फ़ारसी	4. पंजाबी	गुरुमुखी
5. मराठी	देवनागरी	6. कोंकणी	देवनागरी
7. नेपाली	देवनागरी	8. जर्मन	रोमन
9. फ्रांसीसी	रोमन	10. बंगाली	बाँग्ला

अत: हम कह सकते हैं कि–

भाषा के लिखित रूप में जिन ध्वनि-चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें लिपि कहते हैं।

मानक भाषा (Standard Language)– विद्वानों और शिक्षाविदों द्वारा स्वीकृत भाषा रूप **'मानक भाषा'** कहलाती है।

भाषा में एक ही वर्ण या शब्द के एक से अधिक रूप प्रचलित हो सकते हैं। ऐसे में उनके किसी एक रूप को विद्वानों द्वारा मान्यता दे दी जाती है।

जैसे–

अमानक रूप	मानक रूप	अमानक रूप	मानक रूप
1. गये	गए	2. चाहिये	चाहिए
3. नयी	नई	4. जायेंगे	जाएँगे
5. अन्त	अंत	6. सम्बन्ध	संबंध
7. शुद्ध	शुद्ध	8. ठण्ड	ठंड

हिंदी के मानक वर्ण और वर्तनी

केंद्रीय हिंदी निदेशालय के अनुसार मानक हिंदी वर्तनी संबंधी मुख्य बिंदु–

1. विभक्ति-चिह्न संज्ञा शब्दों में पृथक तथा सर्वनाम शब्दों में मिलाकर लिखे जाएँगे; जैसे–

   संज्ञा – रमेश ने

   सर्वनाम – उसने

2. संयुक्त क्रियाएँ पृथक लिखी जाएँगी, जैसे– जा चुका है।
3. अव्यय पृथक लिखे जाएँगे; जैसे– उसके साथ, कहाँ तक।
4. क्रियाविशेषण अव्यय आदि में 'य', 'व' की जगह स्वरात्मक प्रयोग किया जाए; जैसे– गये = गए, हुवा = हुआ। किए, आए, नई, हुआ आदि मानक रूप हैं। जहाँ 'य' शब्द का मूल तत्व हो; वहाँ वह 'य' ही रहेगा; जैसे– स्थायी, अव्ययीभाव, दायित्व आदि में 'य' के स्थान पर 'ई' नहीं आएगा।

Scanned with CamScanner

5. श्री, जी आदि भी अलग लिखे जाएँगे; जैसे– श्री गुप्ता, गुप्ता जी।
6. 'ऋ', 'लृ', 'लॄ', का प्रयोग हिंदी में न होने के कारण इन्हें हिंदी की मानक वर्णमाला में स्थान नहीं दिया गया।
7. संयुक्त वर्ण पाई (ा) हटाकर, घुंडी को आधा कर तथा हलंत (्) लगाकर बनाए जाते हैं; जैसे– पत्ता, चिह्न।
8. शब्द के अंत का हलंत हिंदी में लुप्त हो चुका है; जैसे– पृथक, अर्थात, महान आदि।
9. संयुक्त व्यंजन के रूप में पंचमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार (ं) आएगा। अनुस्वार (ं)व अनुनासिक (ँ) दोनों चिह्न प्रयोग में आएँगे। शिरोरेखा के ऊपर मात्रा व चंद्रबिंदु दोनों के लिए स्थान का अभाव हो जाता है, अतएव अनुस्वार (ं) लगाया जा सकता है; जैसे– मैं = मैं अन्यत्र चंद्रबिंदु का प्रयोग किया जाना चाहिए।
10. कुछ शब्द दोनों रूपों में मानक हैं; जैसे– गर्मी – गरमी, मर्ज़ी–मरज़ी, दर्ज़ी–दरज़ी आदि।
11. तत्सम शब्दों में तीन व्यंजनों के संयोग की स्थिति में एक द्वित्व मूलक व्यंजन लुप्त हो गया है, उसे न लिखने की छूट है; जैसे– अर्द्ध/अर्ध।
12. तत्सम शब्दों के तद्भव हो जाने पर विसर्ग का लोप हो जाता है; जैसे– दु:ख = दुख।
13. पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर' क्रिया से मिलाकर लिखा जाए; जैसे– आकर, लिखकर, बैठकर आदि।
14. क़, ख़, ग़, ज़, फ़' में से अधिकांश आगत ध्वनियाँ हिंदी उच्चारण में परिवर्तित हो गई हैं, केवल ज़, फ़ अभी भी प्रयोग में हैं। अरबी, फ़ारसी या अंग्रेज़ी मूलक शब्दों में उनका प्रयोग मानक है।

साहित्य (Literature)– प्रत्येक भाषा में ज्ञान के अलग-अलग विषयों का भंडार है। यह ज्ञान का संचित कोष है। युगों से प्राप्त ज्ञान को एकत्र किया जाता रहा है। एकत्र किया गया ज्ञान ही **साहित्य** है।

अत: हम कह सकते हैं कि–

ज्ञान के संचित कोष को साहित्य कहते हैं।

साहित्य के प्रकार– साहित्य दो प्रकार के होते हैं– 1. गद्य साहित्य 2. पद्य साहित्य

1. गद्य साहित्य– जिन विचारों को साधारण रूप में लिखते हैं, वे **गद्य साहित्य** के अंतर्गत आते हैं।

जैसे– कहानी, जीवनी, उपन्यास, नाटक, पत्र आदि।

2. पद्य साहित्य– जिन विचारों को काव्य-शैली में प्रस्तुत किया जाता है, वे **पद्य साहित्य** के अंतर्गत आते हैं।

जैसे– कविता, गीत, पद, दोहा, छंद, चौपाई आदि।

व्याकरण

'व्याकरण' का शाब्दिक अर्थ है– विश्लेषण करना। व्याकरण वर्ण, शब्द एवं वाक्य की रचना को व्यवस्थित करता है। व्याकरण का शुद्ध ज्ञान ही हमें भाषा का असली परिचय देता है। व्याकरण के कारण ही भाषा में सदा एकरूपता बनी रहती है। व्याकरण ही भाषा के मनमाने और अशुद्ध प्रयोग पर अंकुश लगाने वाला एकमात्र साधन है। व्याकरण में वर्ण, शब्द और वाक्य को विस्तार से समझाया जाता है।

अत: हम कह सकते हैं कि–

व्याकरण वह शास्त्र है, जो भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान कराता है।

Scanned with CamScanner

व्याकरण के मुख्य रूप से तीन भाग होते हैं–

वर्ण-विचार– इसमें वर्णों (अक्षरों) के रूपों का ज्ञान प्राप्त करके उनका उच्चारण और भेद लिखने की विधि के विषय में विचार किया जाता है।

शब्द-विचार– इसमें शब्दों के भेद, बनावट, उत्पत्ति आदि के विषय में विचार किया जाता है।

वाक्य-विचार– इसमें वाक्यों की रचना, भेद, वाक्य-विग्रह और विराम-चिह्नों के प्रयोग पर विचार किया जाता है।

आओ पाठ दोहराएँ

कौशल-पठन (उच्चारण, अबोध-भाषण

- मन के भावों और विचारों को प्रकट करने का साधन **भाषा** कहलाती है।
- भाषा के प्रकार– 1. मौखिक भाषा 2. लिखित भाषा
- मातृभाषा– जिस भाषा को हम अपने परिवार से सीखते हैं, उसे **मातृभाषा** कहते हैं।
- राष्ट्रभाषा का देश के अधिकतर निवासी प्रयोग करते हैं।
- राजभाषा का प्रयोग देश के कार्यालयों और राज-काज के कार्यों में होता है।
- बोली का क्षेत्र सीमित होता है।
- भाषा का क्षेत्र व्यापक होता है।
- लिखने के ढंग को **लिपि** कहते हैं।
- विद्वानों और शिक्षाविदों द्वारा स्वीकृत भाषा रूप **'मानक भाषा'** है।
- साहित्य के प्रकार– 1. गद्य साहित्य 2. पद्य साहित्य
- व्याकरण का शाब्दिक अर्थ– विश्लेषण करना है।
- व्याकरण के भाग– 1. वर्ण-विचार 2. शब्द-विचार 3. वाक्य-विचार
- वर्ण-विचार में वर्णों के बारे में विचार किया जाता है।
- शब्द-विचार में शब्दों के बारे में विचार किया जाता है।
- वाक्य-विचार में वाक्यों पर विचार किया जाता है।

अभ्यास

मौखिक

कौशल-वाचन (बोध

1. आपकी मातृभाषा क्या है?
2. जब आप अवकाश के लिए प्रधानाचार्य जी को प्रार्थना-पत्र लिखते हैं, तो भाषा के किस रूप का प्रयोग करते हैं?
3. सांकेतिक भाषा को हम भाषा क्यों नहीं मानते हैं?

Scanned with CamScanner

1. निम्नलिखित वाक्यों में ✓ या ✗ निशान लगाइए-

(क) 'भाषा' शब्द भाष् धातु से बना है। ☐

(ख) भाषा के तीन रूप होते हैं। ☐

(ग) बोली का क्षेत्र व्यापक होता है। ☐

(घ) भारत की राजभाषा मराठी है। ☐

(ङ) भाषा और बोली में कोई अंतर नहीं होता है। ☐

(च) साहित्य दो प्रकार के होते हैं। ☐

(छ) बंगाली भाषा की लिपि बाँग्ला है। ☐

(ज) भारतीय संविधान में 24 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। ☐

2. निम्नलिखित स्थितियों में भाषा के किस रूप का प्रयोग होता है? ✓ निशान लगाइए-

(क) अध्यापिका श्यामपट्ट पर प्रश्नों के उत्तर लिख रही हैं। मौखिक भाषा ☐ लिखित भाषा ☐

(ख) रमेश अपने मित्र से फ़ोन पर बात कर रहा है। मौखिक भाषा ☐ लिखित भाषा ☐

(ग) नेहा मोबाइल फ़ोन से अपने मित्र को एस०एम०एस० कर रही है। मौखिक भाषा ☐ लिखित भाषा ☐

(घ) दादा जी अख़बार पढ़ रहे हैं। मौखिक भाषा ☐ लिखित भाषा ☐

(ङ) मम्मी बच्चों को कविता सुना रही हैं। मौखिक भाषा ☐ लिखित भाषा ☐

3. कोष्ठक में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) मन के भावों अथवा विचारों को ..... प्रकट करना मौखिक भाषा कहलाता है। (बोलकर / लिखकर)

(ख) भाषा के लिखने के ढंग को ..... कहते हैं। (साहित्य / लिपि)

(ग) 'जोधपुरी' ..... है। (बोली / भाषा)

(घ) हिंदी भाषा की लिपि ..... है। (फ़ारसी / देवनागरी)

(ङ) हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा ..... को मिला। (14 जनवरी, 1949 / 14 सितंबर, 1949)

(च) व्याकरण के मुख्य रूप से ..... भाग होते हैं। (चार / तीन)

(छ) व्याकरण वर्ण, शब्द एवं वाक्य की रचना को ..... करता है। (अव्यवस्थित / व्यवस्थित)

(ज) ज्ञान के संचित कोष को ..... कहते हैं। (साहित्य / बोली)

4. निम्नलिखित शब्दों को मानक रूप में लिखिए-

(क) अशुद्ध .....

(ख) रुपये .....

(ग) सुन्दर .....

(घ) डण्डा .....

(ङ) सम्बन्ध .....

(च) झण्डा .....

Scanned with CamScanner

5. निम्नलिखित भाषाओं की लिपियाँ लिखिए-

हिंदी	.....	बंगाली	.....
जर्मन	.....	पंजाबी	.....
अंग्रेजी	.....	उर्दू	.....
नेपाली	.....	संस्कृत	.....

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) भाषा के लिखित रूप के महत्त्व एवं आवश्यकता पर प्रकाश डालिए।

(ख) राजभाषा और राष्ट्रभाषा में अंतर लिखिए।

(ग) व्याकरण की परिभाषा लिखिए।

(घ) साहित्य किसे कहते हैं?

(ङ) भाषा और बोली में कोई दो अंतर बताइए।

7. अलग-अलग भाषा या बोली बोलने से क्या हम अलग-अलग हो जाते हैं? नहीं न! क्योंकि रंग-रूप, वेशभूषा आदि अनेक हैं, फिर भी हम सब एक हैं। क्या आप इस बात से सहमत हैं? यदि हाँ, तो क्यों?

मूल्यपरक प्रश्न

गतिविधि

रचनात्मक-लेखन (विचार, भाव, लिखावट)

- खेल-खेले में-

दिए गए वर्ग-जाल में से भाषाओं के नाम छाँटकर लिखिए–

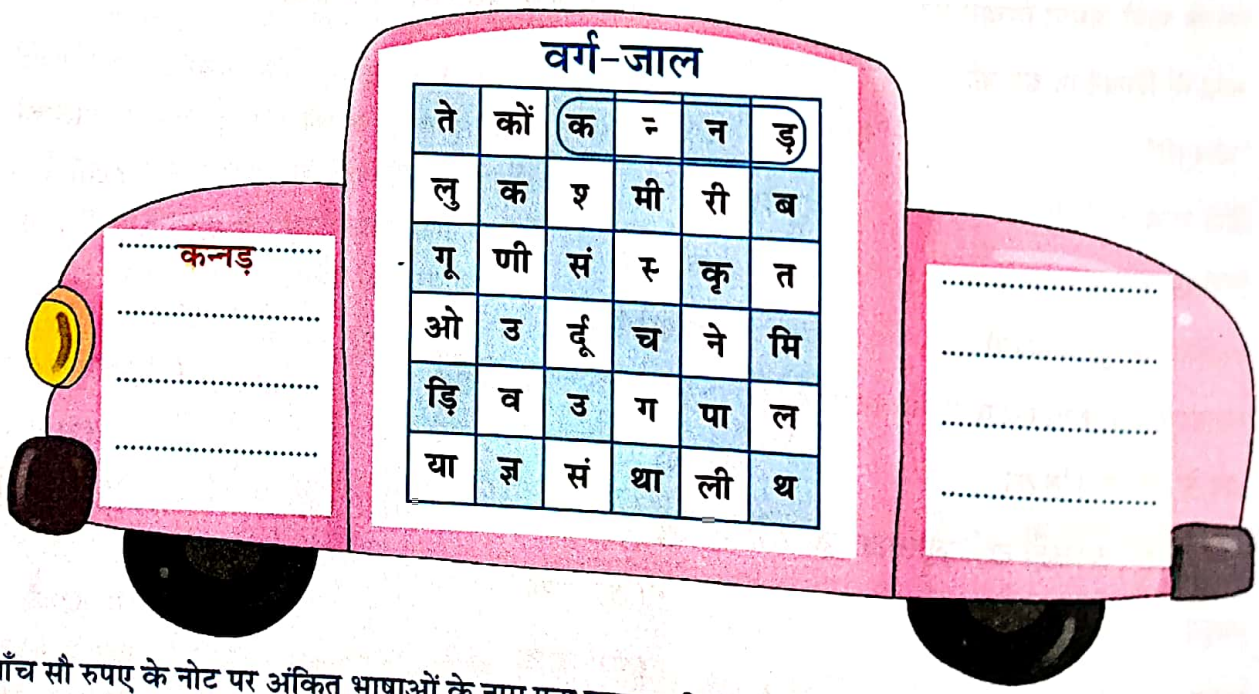

- पाँच सौ रुपए के नोट पर अंकित भाषाओं के नाम पता लगाकर लिखिए।
- भारत के मानचित्र में राज्यों के नाम तथा वहाँ बोली जाने वाली भाषाओं के नाम लिखिए।

Scanned with CamScanner

2 वर्ण-विचार
(Orthography/Phonology)

भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण है। ये वे ध्वनि-चिह्न होते हैं, जिनके खंड नहीं हो सकते। अत: हम कह सकते हैं कि–

भाषा की सबसे छोटी इकाई जिसके खंड या टुकड़े नहीं किए जा सकते, उसे वर्ण कहते हैं।

महत्त्व– वर्ण भाषा की बुनियाद होते हैं। इन्हीं के माध्यम से शब्दों की रचना होती है। भाषा के शुद्ध उच्चारण और शुद्ध लेखन के लिए इन वर्णों का ज्ञान आवश्यक है।

वर्णमाला (Alphabet)– वर्णमाला का शाब्दिक अर्थ होता है– वर्ण + माला = वर्णमाला अर्थात वर्णों का समूह।

किसी भी भाषा के मूल ध्वनि-चिह्नों के व्यवस्थित समूह को **वर्णमाला** कहते हैं।

वर्ण के दो भेद होते हैं–

1. स्वर– जिन वर्णों के उच्चारण में किसी दूसरे वर्ण की सहायता की ज़रूरत नहीं होती, उन्हें **स्वर** कहते हैं। इनका उच्चारण करते समय मुख से निकलने वाली वायु बिना रुके बाहर आ जाती है।

हिंदी में ग्यारह (11) स्वर होते हैं– अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

स्वर के तीन भेद होते हैं–

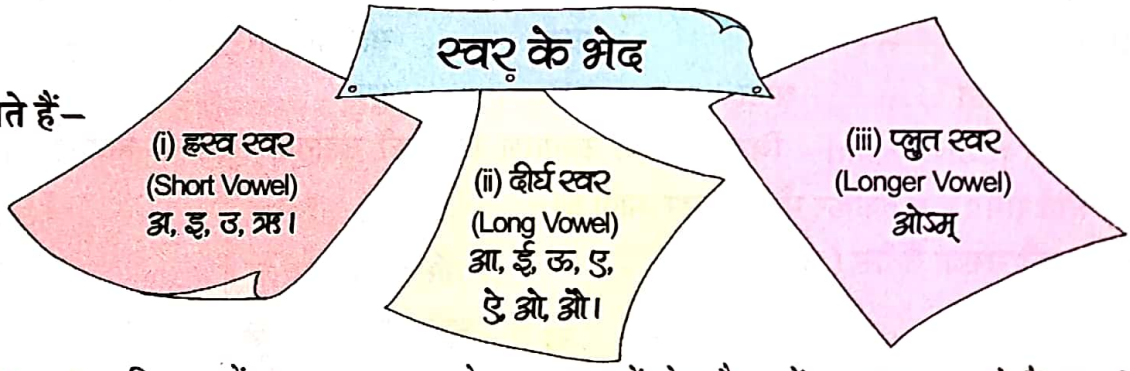

(i) ह्रस्व स्वर (Short Vowel)– जिन स्वरों का उच्चारण सबसे कम समय में होता है, उन्हें **ह्रस्व स्वर** कहते हैं। इनकी संख्या चार होती है– **अ, इ, उ** तथा **ऋ**।

(ii) दीर्घ स्वर (Long Vowel)– जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दोगुना समय लगता है, उन्हें **दीर्घ स्वर** कहते हैं। इनकी संख्या सात होती है– **आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ** तथा **औ**।

(iii) प्लुत स्वर (Longer Vowel)– जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तीन गुना समय लगता है, उन्हें **प्लुत स्वर** कहते हैं। इनका प्रयोग अधिकतर पुकारते समय किया जाता है। इसका चिह्न (ऽ) है; जैसे–ओऽम्, आदि। आजकल इसका प्रयोग नहीं के बराबर होता है।

Scanned with CamScanner

स्वरों की मात्राएँ

स्वर –	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
मात्रा –	नहीं	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ
शब्द –	कमल	नाम	दिन	कील	कुछ	कूल	कृपा	सेब	वैसा	ओस	कौन

विशेष 'अ' सभी व्यंजनों में मिला होता है। यदि हमें 'अ' रहित व्यंजन लिखना हो, तो व्यंजन के नीचे हलंत (्) लगाकर लिखेंगे; जैसे– क्, च्, ट् आदि। स्वर रहित व्यंजन हम लिख तो सकते हैं लेकिन उच्चारण नहीं कर सकते।

- 'र' का प्रयोग मात्राओं के रूप में भी होता है; जैसे– र (मूल रूप) राम; (र्) (स्वर रहित) धर्म; (^) (स्वर सहित, नीचे से गोल व्यंजनों के साथ) ट्रक।
- 'उ' और 'ऊ' की मात्राएँ 'र' के पेट में लगाई जाती हैं– र्+उ = रु र्+ऊ = रू
- किसी भी शब्द में व्यंजन के साथ स्वर की जिस मात्रा का प्रयोग किया जाता है, उसी की ध्वनि सुनाई देती है। जैसे– किताब = क्+इ+त्+आ+ब्+अ

अनुस्वार (ं)– इसका उच्चारण नाक से होता है। ये 'न्' या 'म्' के समान होता है; जैसे– चंदा, पंख, शंख आदि। इसका चिह्न (ं) है। इसका प्रयोग पंचमाक्षर (ङ, ञ, ण, न तथा म) के स्थान पर किया जाता है; जैसे– चञ्चल – चंचल, सम्बन्ध – संबंध आदि।

अनुनासिक (ँ)– इसका उच्चारण नाक और मुँह दोनों से होता है। इसको चंद्रबिंदु भी कहते हैं। इसका चिह्न (ँ) होता है। जैसे– चाँद, मुँह, आँख आदि।

विसर्ग (:)– इसका प्रयोग अधिकतर तत्सम (संस्कृत) शब्दों में होता है। इसका उच्चारण 'ह' के समान होता है। इसका चिह्न (:) है; जैसे– अत:, पुन:, प्रात: आदि।

विशेष अं, अ: अयोगवाह कहलाते हैं। वर्णमाला में इनकी जगह स्वरों के बाद और व्यंजनों से पहले होती है। 'अं' को अनुस्वार और 'अ:' को विसर्ग कहते हैं।

आगत ध्वनि– यानी अर्धचंद्र। इसका प्रयोग अंग्रेज़ी भाषा के शब्दों में किया जाता है; जैसे– बॉल, डॉक्टर, कॉपी आदि।

इसी प्रकार से– ज़ और फ़ ध्वनि भी कहीं-कहीं शब्दों में अर्थ भेद को स्पष्ट करने के लिए प्रयोग की जाती हैं।

जैसे–	जरा	–	बूढ़ा	फन	–	साँप का सिर
	ज़रा	–	थोड़ा	फ़न	–	गुण

2. व्यंजन (Consonant)– जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से किया जाता है, उन्हें **व्यंजन** कहते हैं। इनका उच्चारण करते समय हवा रुककर मुँह से बाहर आती है।

व्यंजन की संख्या तैंतीस (33) है–

व्यंजन						
क वर्ग	क	ख	ग	घ	ङ	पंचम वर्ण
च वर्ग	च	छ	ज	झ	ञ	
ट वर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण	
त वर्ग	त	थ	द	ध	न	
प वर्ग	प	फ	ब	भ	म	
अंत:स्थ	य	र	ल	व		
ऊष्म	श	ष	स	ह		

अन्य: ड़ ढ़

संयुक्त व्यंजन: क्ष त्र ज्ञ श्र

संयुक्त व्यंजन तथा अन्य को मिलाकर उनतालीस (39) व्यंजन होते हैं।

Scanned with CamScanner

विशेष 'ढ़' तथा 'ड़' से किसी भी शब्द की शुरुआत नहीं होती। इनका प्रयोग शब्द के बीच में या अंत में होता है; जैसे– पढ़ाई, लड़ाई आदि।

व्यंजन के तीन भेद होते हैं–

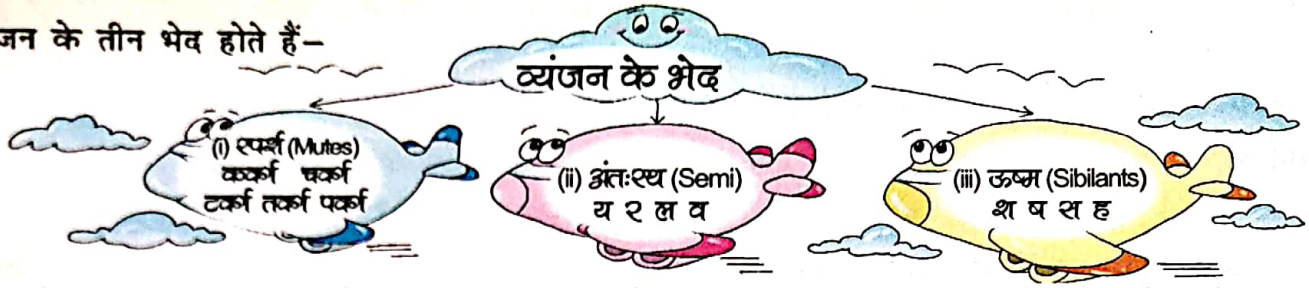

(i) **स्पर्श व्यंजन–** जिन व्यंजन वर्णों का उच्चारण करने पर मुँह से निकलने वाली हवा उच्चारण के स्थान से स्पर्श यानी छूकर निकलती है, उन्हें **स्पर्श व्यंजन** कहते हैं।

स्पर्श व्यंजन संख्या में पच्चीस (25) होते हैं–

क वर्ग	क	ख	ग	घ	ङ
च वर्ग	च	छ	ज	झ	ञ
ट वर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण
त वर्ग	त	थ	द	ध	न
प वर्ग	प	फ	ब	भ	म

विशेष इनका नाम प्रथम वर्ण के आधार पर जाना जाता है; जैसे– क वर्ग– क, ख, ग, घ, ङ

(ii) **अंतःस्थ व्यंजन–** इन व्यंजनों का उच्चारण स्वर एवं व्यंजन के बीच होने के कारण, इन्हें **अंतःस्थ व्यंजन** (मध्य में स्थित) कहा जाता है। इन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ मुँह के किसी भी भाग को पूरी तरह स्पर्श नहीं करती है। ये संख्या में चार हैं– य, र, ल, व।

(iii) **ऊष्म व्यंजन–** इनका उच्चारण करते समय मुँह से हवा के रगड़ खाने के कारण ऊष्मा (गर्मी) पैदा होती है; इसलिए इन्हें **ऊष्म व्यंजन** कहते हैं। ये भी संख्या में चार हैं– श, ष, स, ह।

उच्चारण स्थान के आधार पर– सभी व्यंजन मुख के विभिन्न भागों से निकलते हैं, इसलिए व्यंजनों का उच्चारण स्थान भी अलग-अलग होता है। व्यंजनों के उच्चारण स्थान निम्न हैं–

कंठ्य	(गले से)	कवर्ग
तालव्य	(तालु से)	च वर्ग तथा य और श
मूर्धन्य	(तालु के मूर्धा भाग से)	ट वर्ग (ड़ ढ़ सहित), ष
वर्त्सय	(दाँतों की जड़ से)	स, ज़, ल
दंत्य	(दाँतों से)	त, थ, द, ध, न
ओष्ठ्य	(दोनों होंठों से)	पवर्ग
दंतोष्ठ्य	(नीचे का होंठ और ऊपर का दाँत)	व, फ़
स्वरयंत्रीय	(स्वरयंत्र से)	ह्
नासिका	(नाक से)	ङ, ञ, ण, न, म

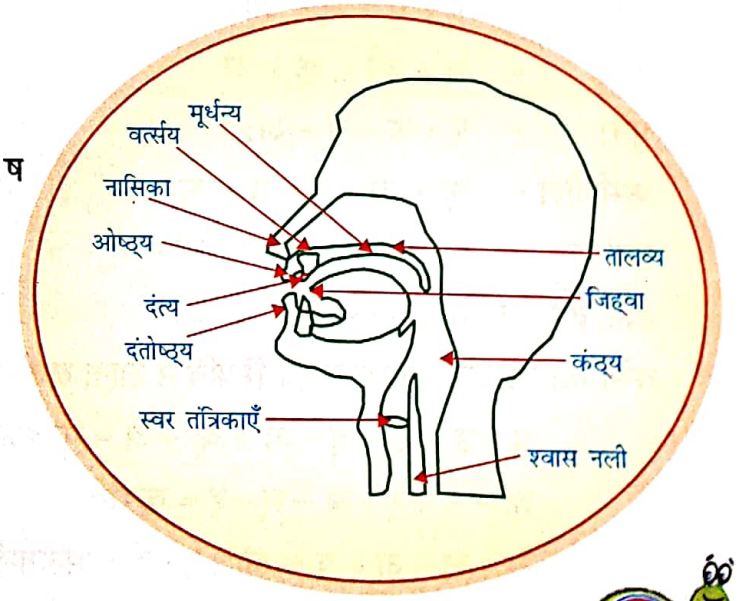

Scanned with CamScanner

श्वास (प्राण) की मात्रा के आधार पर– श्वास की मात्रा के अनुसार व्यंजनों के **अल्पप्राण** तथा **महाप्राण** दो भेद होते हैं–

अल्पप्राण व्यंजन– जिन व्यंजनों के उच्चारण में वायु की मात्रा कम प्रयोग होती है, वे **अल्पप्राण व्यंजन** कहलाते हैं। हर वर्ग का पहला, तीसरा या पाँचवाँ व्यंजन और 'ड़, य, र, ल तथा व' अल्पप्राण हैं; जैसे– क वर्ग– पहला तीसरा पाँचवाँ

क ग ङ

महाप्राण व्यंजन– जिन व्यंजनों के उच्चारण में श्वास वायु की मात्रा अधिक प्रयोग होती है, उन्हें **महाप्राण व्यंजन** कहते हैं। हर वर्ग का दूसरा व चौथा व्यंजन और 'ढ़, ष, श, स तथा ह' महाप्राण हैं; जैसे– क वर्ग– दूसरा चौथा

ख घ

संयुक्त व्यंजन– जब दो या दो से अधिक व्यंजनों का परस्पर संयोग होता है, तो उसे **संयुक्त व्यंजन** कहते हैं। संयुक्त व्यंजन विभिन्न रूप में प्रयोग होते हैं; जैसे–

1. संयुक्त व्यंजनों का स्वतंत्र प्रयोग–

क्ष– पक्षी, क्षमा, अक्षर **त्र–** नेत्र, क्षत्रिय, मित्र **ज्ञ–** आज्ञा, यज्ञ, ज्ञानी **श्र–** श्रम, श्रवण, श्रमिक

2. द्वित्व व्यंजन– एक व्यंजन का अपने समरूप व्यंजन से मेल होता है, तो उसे **द्वित्व व्यंजन** कहते हैं; जैसे– प्रसन्न, उत्तर, उद्देश्य, सज्जन, दुस्साहस।

संयुक्ताक्षर– जब एक स्वर रहित व्यंजन अन्य स्वर सहित व्यंजन से मिलता है, तब वह **संयुक्ताक्षर** कहलाता है।

जैसे– द् + य = द्य – विद्यालय द् + ध = द्ध – बुद्धि

नुक्ता– उर्दू से आए शब्दों में क़, ख़, ग़, ज़, फ़ के नीचे एक बिंदी लगती है; जैसे– शौक़, ख़ुदा फ़र्क़ आदि। इसी प्रकार अंग्रेज़ी के F और Z की ध्वनि का उच्चारण करने के लिए भी इसका प्रयोग होता है; जैसे– फ़ेल, फ़ुटबॉल आदि।

वर्ण-विच्छेद– शब्दों के वर्ण को अलग-अलग करके लिखना **वर्ण-विच्छेद** कहलाता है।

कुछ उदाहरण–

कमल = क् + अ + म् + अ + ल् + अ
किताब = क् + इ + त् + आ + ब् + अ
कुरसी = क् + उ + र् + अ + स् + ई
कृपा = क् + ऋ + प् + आ
पैसा = प् + ऐ + स् + आ
चौक = च् + औ + क् + अ
पुनः = प् + उ + न् + अः
कर्मशील = क् + अ + र् + म् + अ + श् + ई + ल् + अ
प्रकाश = प् + र् + अ + क् + आ + श् + अ

रमन = र् + अ + म् + अ + न् + अ
बालक = ब् + आ + ल् + अ + क् + अ
नदी = न् + अ + द् + ई
कूलर = क् + ऊ + ल् + अ + र् + अ
करेला = क् + अ + र् + ए + ल् + आ
रोटी = र् + ओ + ट् + ई
कंगन = क् + अं + ग् + अ + न् + अ
ड्रम = ड् + र् + अ + म् + अ
त्रिभुज = त् + र् + इ + भ् + उ + ज् + अ

अब हम वर्ण-मेल जानेंगे–

वर्णों को मिलाकर पहले वाली स्थिति में लाना **वर्ण-मेल** कहलाता है; जैसे–

प् + उ + स् + त् + अ + क् + अ = पुस्तक
क् + उ + र् + अ + स् + ई = कुरसी
अ + ल् + अ + म् + आ + र् + ई = अलमारी।
क् + अ + म् + अ + र् + आ = कमरा
स् + उ + न् + द् + अ + र + अ = सुंदर
श् + अ + र् + ई + र् + अ = शरीर

Scanned with CamScanner

विशेष **'र' के प्रयोग के नियम–**

1. जब 'र्' किसी व्यंजन से पहले आए, तो वह आगे वाले वर्ण पर रेफ (र्‍) के रूप में लगता है।

   जैसे– र् + म = र्म = नर्म र् + म = र्म = शर्म

2. 'र' से पूर्व कोई स्वर रहित व्यंजन हो, तो 'र' उस व्यंजन में नीचे (्र) के रूप में लगाया जाता है।

   जैसे– म् + र = म्र = आम्र प् + र = प्र = प्रमोद

3. 'ट्' और 'ड्' के बाद 'र' आने से उसका रूप इस प्रकार हो जाता है; जैसे– ड + र = ड्र – ड्रामा, ट + र = ट्र = ट्रक

4. 'स्' के साथ 'र' हो तो 'स्र बनता है; जैसे– स्रोत, स्राव आदि।

5. 'स् + त्र् + अ' को 'स्त्र' रूप में लिखा जाता है; जैसे– स्त्री, सहस्त्र, शास्त्र आदि।

आओ पाठ दोहराएँ

कौशल-पठन (उच्चारण, अबोध-भाषण)

- भाषा की सबसे छोटी इकाई को **वर्ण** कहते हैं।
- वर्ण भाषा की बुनियाद होते हैं।
- वर्णों के व्यवस्थित समूह को **वर्णमाला** कहते हैं।
- वर्ण के भेद– 1. स्वर 2. व्यंजन
- स्वरों के उच्चारण में वर्णों की सहायता नहीं ली जाती है।
- स्वर के भेद– 1. ह्रस्व स्वर 2. दीर्घ स्वर 3. प्लुत स्वर
- व्यंजन के उच्चारण में स्वरों की सहायता ली जाती है।
- व्यंजन के भेद– 1. स्पर्श व्यंजन 2. अंत:स्थ व्यंजन 3. ऊष्म व्यंजन
- श्वास की मात्रा के आधार पर व्यंजनों के भेद– 1. अल्पप्राण 2. महाप्राण
- संयुक्त व्यंजन में दो या दो से अधिक व्यंजनों का परस्पर मेल होता है।
- द्वित्व व्यंजन में एक व्यंजन का समरूप व्यंजन से मेल होता है।
- 'र' के प्रयोग के अलग-अलग नियम होते हैं।
- शब्दों के वर्णों को अलग-अलग करना **वर्ण-विच्छेद** कहलाता है।
- वर्णों को मिलाकर पहले वाली स्थिति में लाना **वर्ण-मेल** कहलाता है।

अभ्यास

मौखिक

कौशल-वाचन (बोध, संवाद)

1. वर्णों का क्या महत्त्व है?
2. वर्ण-विच्छेद किसे कहते हैं?
3. संयुक्ताक्षर से आप क्या समझते हैं?

Scanned with CamScanner

लिखित

1. निम्नलिखित वर्णों के उचित उच्चारण स्थान में ✓ निशान लगाइए-

(क) पवर्ग	ओष्ठ्य	☐	दंतोष्ठ्य	☐
(ख) चवर्ग, य, श	तालव्य	☐	कंठ्य	☐
(ग) ह	स्वरयंत्रीय	☐	वर्त्सय	☐
(घ) कवर्ग	कंठ्य	☐	मूर्धन्य	☐

2. निम्नलिखित वर्णों में से अल्पप्राण और महाप्राण वर्णों को छाँटकर लिखिए-

द, त, थ, न, क, ण, ड, ट, झ, ज, च, भ, म, व, स, ह, फ

(क) अल्पप्राण - .....

(ख) महाप्राण - .....

3. दिए गए शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) भाषा की सबसे छोटी इकाई ..... होती है।

(ख) उच्चारण तथा प्रयोग के आधार पर वर्ण के दो भेद ..... तथा ..... होते हैं।

(ग) वर्णों के व्यवस्थित समूह को ..... कहते हैं।

(घ) स्वर बिना किसी ..... की सहायता से बोले जाते हैं।

(ङ) सभी व्यंजन ..... की सहायता से बोले जाते हैं।

(च) दीर्घ स्वर में ह्रस्व स्वर से ..... समय लगता है।

(छ) दो भिन्न व्यंजनों के योग से बने वर्ण ..... व्यंजन कहलाते हैं।

(ज) अनुस्वार और विसर्ग को ..... कहते हैं।

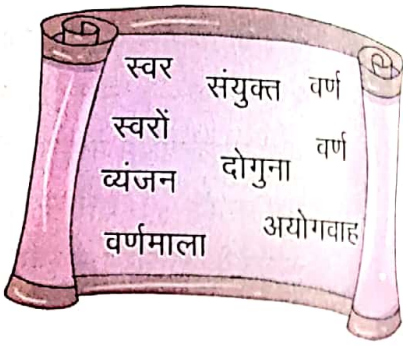

4. निम्नलिखित शब्दों का संयुक्त व्यंजन और द्वित्व व्यंजन से मिलान कीजिए-

मित्र	संयुक्त व्यंजन	त्रिभुज
पल्लवी	द्वित्व व्यंजन	कच्चा
शिक्षा		बच्चा

5. निम्नलिखित शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए-

(क) हिंदी .....

(ख) व्याकरण .....

(ग) तपस्या .....

(घ) पार्वती .....

(ङ) किताब .....

(च) चिंपैंज़ी .....

6. वर्णों के मेल से शब्द बनाइए-

(क) क् + अ + प् + अ + ट् + अ = ...

(ख) स् + आ + र् + थ् + अ + क् + अ = ...

(ग) स् + अ + म् + आ + न् + आ + र् + थ् + अ + क् + अ = ...

(घ) स् + अ + न् + ध् + इ = ...

(ङ) प् + अ + र् + आ + ध् + ई + न् + अ = ...

Scanned with CamScanner

7. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) स्वर के कितने भेद होते हैं? उनके नाम लिखिए।

(ख) ह्रस्व स्वर किसे कहते हैं?

(ग) महाप्राण और अल्पप्राण में क्या अंतर है? स्पष्ट कीजिए।

(घ) संयुक्त व्यंजन और द्वित्व व्यंजन में अंतर स्पष्ट कीजिए।

8. वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है। फिर भी भाषा में इसका बहुत महत्त्व होता है। इस आधार पर बताइए कि हमें किस पर घमंड नहीं करना चाहिए और क्यों? **मूल्यपरक प्रश्न**

गतिविधि

रचनात्मक-लेखन (विचार, भाव, लिखावट)

- आप प्रतिदिन समाचार-पत्र या टी०वी० पर आए कार्यक्रम से कोई भी पाँच कठिन शब्द अपनी एक कॉपी में लिखिए और उनका अर्थ भी शब्दकोश या अन्य की सहायता से लिखिए। इस प्रकार आपका स्वयं का शब्दकोश तैयार हो जाएगा।
- खेल-खेल में-

यह खेल दो टीमों या दो बच्चों के मध्य खेला जा सकता है। इस खेल में स्वर, व्यंजन या मात्रा युक्त व्यंजन जोड़कर नए शब्द बनाते हैं। शब्द ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर, दाएँ से बाएँ अथवा आड़े भी बनाए जा सकते हैं। हमने कुछ शब्दों से खेल का आरंभ किया है। अब आप अधिक-से-अधिक शब्द बनाकर खेल को देर तक खेल सकते हैं। टीम द्वारा एक शब्द बनाने पर एक अंक मिलेगा। जो टीम सबसे ज्यादा शब्द बनाएगी वह टीम विजयी होगी।

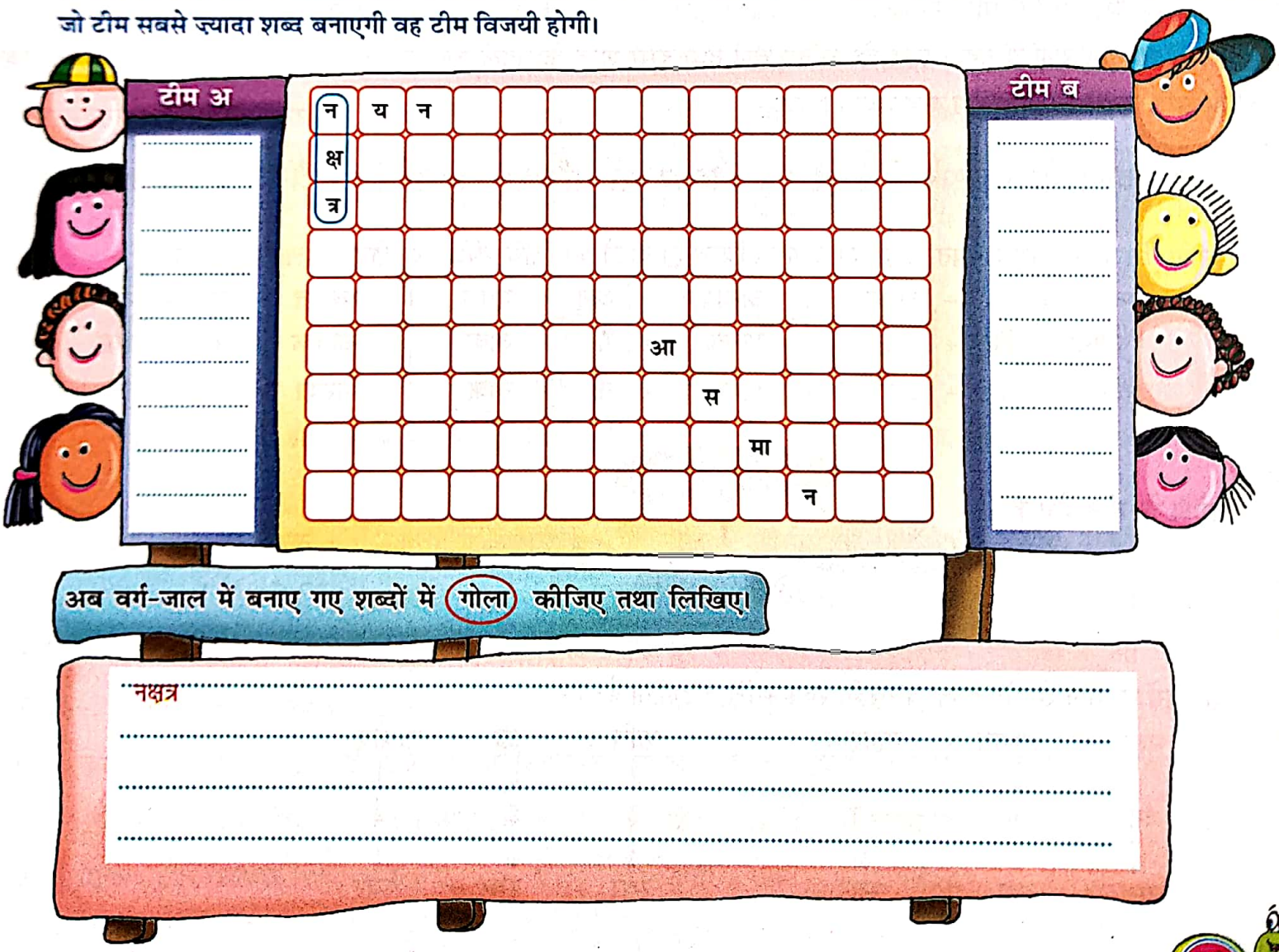

अब वर्ग-जाल में बनाए गए शब्दों में (गोला) कीजिए तथा लिखिए।

नक्षत्र .....

.....

.....

.....

Scanned with CamScanner

संधि
(Joining)

संधि का सामान्य अर्थ है– मेल। व्याकरण में संधि दो वर्णों में होती है।
जब दो शब्दों के पास-पास के वर्णों में मेल हो जाता है, तब वह **संधि** कहलाता है; जैसे–

गज + आनन = गजानन
↓ ↓ ↓
अ + आ = आ

(यहाँ 'गज' शब्द का 'अ' और 'आनन' शब्द का 'आ' में संधि हुई है।)

महा + आत्मा = महात्मा
↓ ↓ ↓
आ + आ = आ

(यहाँ 'महा' शब्द का 'आ' और 'आत्मा' शब्द का 'आ' में संधि हुई है।)

उपर्युक्त उदाहरणों में पहले शब्द के अंतिम वर्ण तथा दूसरे शब्द के पहले वर्ण के मेल से परिवर्तन आ गया है। ऐसे परिवर्तन को ही **संधि** कहते है। अत: हम कह सकते हैं कि–

दो वर्णों के परस्पर मेल से जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते हैं।

संधि-विच्छेद– संधि युक्त शब्दों को अलग (विच्छेद) करने की विधि **संधि-विच्छेद** कहलाती है; जैसे–

स्वच्छ = सु + अच्छ	अन्वेषण = अनु + एषण	स्वागत = सु + आगत
पित्राज्ञा = पितृ + आज्ञा	गायक = गै + अक	नाविक = नौ + इक
पवन = पो + अन	पावक = पौ + अक	गिरीश = गिरि + ईश

संधि के तीन भेद हैं–

1. स्वर संधि

दो स्वरों के मेल से होने वाला परिवर्तन **स्वर संधि** कहलाता है; जैसे–

महा + आशय = महाशय
↓ ↓ ↓
आ + आ = आ
↓ ↓ ↓
स्वर + स्वर = स्वर

कवि + इंद्र = कवींद्र
↓ ↓ ↓
इ + इ = ई
↓ ↓ ↓
स्वर + स्वर = स्वर

Scanned with CamScanner

स्वर संधि के भेद

स्वर संधि के पाँच भेद हैं– (क) दीर्घ संधि (ख) गुण संधि (ग) वृद्धि संधि (घ) यण संधि (ङ) अयादि संधि

(क) दीर्घ संधि– जब ह्रस्व (**अ, इ, उ**) या दीर्घ स्वर (**आ, ई, ऊ**) के बाद यदि उसी स्वर का ह्रस्व या दीर्घ स्वर परस्पर निकट आ जाएँ, तो दोनों के मेल से दीर्घ (**आ, ई, ऊ**) हो जाते हैं; जैसे–

वेद + अंत	= वेदांत	अ + अ	= आ	हिम + आलय	= हिमालय	अ + आ	= आ
रेखा + अंकित	= रेखांकित	आ + अ	= आ	महा + आत्मा	= महात्मा	आ + आ	= आ
रवि + इंद्र	= रवींद्र	इ + इ	= ई	गिरि + ईश	= गिरीश	इ + ई	= ई
शची + इंद्र	= शचींद्र	ई + इ	= ई	सती + ईश	= सतीश	ई + ई	= ई
लघु + उत्तर	= लघूत्तर	उ + उ	= ऊ	लघु + ऊर्मि	= लघूर्मि	उ + ऊ	= ऊ
वधू + उत्सव	= वधूत्सव	ऊ + उ	= ऊ	वधू + ऊर्जा	= वधूर्जा	ऊ + ऊ	= ऊ

(ख) गुण संधि– जब **अ, आ** के बाद, **इ, ई, उ, ऊ** तथा **ऋ** स्वर आते हैं, तो इनके स्थान पर क्रमशः **ए, ओ** तथा **अर्** हो जाता है; जैसे–

देव + इंद्र	= देवेंद्र	अ + इ	= ए	सुर + ईश	= सुरेश	अ + ई	= ए
महा + इंद्र	= महेंद्र	आ + इ	= ए	स्व + इच्छा	= स्वेच्छा	अ + इ	= ए
गण + ईश	= गणेश	अ + ई	= ए	राजा + इंद्र	= राजेंद्र	आ + इ	= ए
यथा + ईष्ट	= यथेष्ट	आ + ई	= ए	राजा + ईश	= राजेश	आ + ई	= ए
पर + उपकार	= परोपकार	अ + उ	= ओ	लोक + उक्ति	= लोकोक्ति	अ + उ	= ओ
महा + उत्सव	= महोत्सव	आ + उ	= ओ	महा + उदय	= महोदय	आ + उ	= ओ
जल + ऊर्मि	= जलोर्मि	अ + ऊ	= ओ	समुद्र + ऊर्मि	= समुद्रोर्मि	अ + ऊ	= ओ
दया + ऊर्मि	= दयोर्मि	आ + ऊ	= ओ	गंगा + ऊर्मि	= गंगोर्मि	आ + ऊ	= ओ
देव + ऋषि	= देवर्षि	अ + ऋ	= अर्	सप्त + ऋषि	= सप्तर्षि	अ + ऋ	= अर्
महा + ऋषि	= महर्षि	आ + ऋ	= अर्	राजा + ऋषि	= राजर्षि	आ + ऋ	= अर्

(ग) वृदधि संधि– यदि **अ, आ** के बाद **ए, ऐ** या **ओ, औ** स्वर आएँ, तो उनके स्थान पर क्रमशः **'ऐ'** और **'औ'** हो जाता है; जैसे–

एक + एक	= एकैक	अ + ए	= ऐ	जल + ओध	= जलौध	अ + ओ	= औ
तथा + एव	= तथैव	आ + ए	= ऐ	महा + ओजस्वी	= महौजस्वी	आ + ओ	= औ
मत + ऐक्य	= मतैक्य	अ + ऐ	= ऐ	सुर + औदार्य	= सुरौदार्य	अ + औ	= औ
राजा + ऐश्वर्य	= राजैश्वर्य	आ + ऐ	= ऐ	महा + औषध	= महौषध	आ + औ	= औ

(घ) यण संधि– यदि **इ, ई, उ, ऊ** या **ऋ** के बाद कोई अन्य स्वर आ जाए, तो उनके स्थान पर क्रमशः **य, व, र** हो जाता है; जैसे–

अति + अधिक	= अत्यधिक	इ + अ	= य	इति + आदि	= इत्यादि	इ + आ	= या
प्रति + एक	= प्रत्येक	इ + ए	= ये	उपरि + उक्त	= उपर्युक्त	इ + उ	= यु

Scanned with CamScanner

नि + ऊन	= न्यून	इ + ऊ	= यू	सु + अच्छ	= स्वच्छ	उ + अ	= व
सु + आगत	= स्वागत	उ + आ	= वा	अनु + इति	= अन्विति	उ + इ	= वि
अभि + आगत	= अभ्यागत	इ + आ	= या	पितृ + अनुमति	= पित्रनुमति	ऋ + अ	= र
देवी + आगमन	= देव्यागमन	ई + आ	= या	मातृ + इच्छा	= मात्रिच्छा	ऋ + इ	= र्

(ङ) अयादि संधि– यदि **ए, ऐ, ओ, औ** के बाद कोई अन्य स्वर आए, तो इनके स्थान पर क्रमशः **अय, आय, अव, आव** हो जाता है; जैसे–

शे + अन	= शयन	ए + अ	= अय	पौ + अक	= पावक	औ + अ	= आव
गै + अक	= गायक	ऐ + अ	= आय	नौ + इक	= नाविक	औ + इ	= अवि
पो + अन	= पवन	ओ + अ	= अव	भौ + उक	= भावुक	औ + उ	= आवु

2. व्यंजन संधि

दो शब्दों के मेल से व्यंजन का व्यंजन या स्वर से मेल होने पर जो विकार (परिवर्तन) होता है, उसे **व्यंजन संधि** कहते हैं। अर्थात व्यंजन तथा स्वर का, स्वर तथा व्यंजन का या व्यंजन तथा व्यंजन का मेल होने से जो परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं; जैसे–

सत् + आचार	= सदाचार	त् + आ	= दा	सत् + जन	= सज्जन	त् + ज	= ज्ज
दिक् + गज	= दिग्गज	क् + ग	= ग्ग	जगत् + नाथ	= जगन्नाथ	त् + ना	= न्ना
उत् + चारण	= उच्चारण	त् + चा	= च्च	उत् + लेख	= उल्लेख	त् + ल	= ल्ल

व्यंजन संधि के कुछ नियम तथा उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं–

व्यंजन संधि के कुछ नियम

(क) वर्ग के पहले वर्ण का उसी वर्ग के तीसरे वर्ण में परिवर्तित होना: क्, च्, ट्, त्, प् के बाद यदि कोई स्वर, वर्ग का तीसरा या चौथा व्यंजन (ग्, घ्, ज्, झ्, ड्, ढ्, ध्, ब्, भ्) अथवा य्, र्, ल्, व्, ह्, में से कोई व्यंजन आए, तो **क्,** का **ग्, च्** का ज्, **ट्** का **ड्, त्** का **द्, प्** का **ब्** बन जाता है; जैसे–

	दिक्	+	दर्शन	=	दिग्दर्शन	(क्	+	द	=	ग्द)
	दिक्	+	गज	=	दिग्गज	(क्	+	ग	=	ग्ग)
	दिक्	+	अंबर	=	दिगंबर	(क्	+	अ	=	ग)
	वाक्	+	ईश	=	वागीश	(क्	+	ई	=	गी)
	कप्	+	अंध	=	कबंध	(प्	+	अ	=	ब)
च् का ज –	अच्	+	अंत	=	अजंत	(च्	+	अ	=	ज)
ट् का ड –	षट्	+	आनन	=	षडानन	(ट्	+	आ	=	डा)
	षट्	+	दर्शन	=	षड्दर्शन	(ट्	+	द	=	ड्)
त् का द –	जगत्	+	अंबा	=	जगदंबा	(त्	+	अ	=	द)

Scanned with CamScanner

(ख) वर्ग के पहले वर्ण का पाँचवें वर्ण में परिवर्तित होना; जैसे–

क् का ङ् –

वाक्	+	मय	=	वाङ्मय	(क्	+	म	=	ङ्)
षट्	+	मास	=	षणमास	(ट्	+	मा	=	ण्)
तत्	+	मय	=	तन्मय	(त्	+	म	=	न्)
अप्	+	मल	=	अम्मल	(प्	+	म	=	म्म)

(ग) 'त' संबंधी विशेष नियम– यदि **'त'** के बाद **च / छ** आए तो **त्, च्** में परिवर्तित हो जाता है और त् के बाद **ज / झ** आए, तो **ज्** में, **ट् / ठ्** आए, तो **ड्** में, **त** के बाद **ल** आए, तो **त्, ल्** हो जाता है; जैसे–

शरत्	+	चंद्र	=	शरच्चंद्र	(त्	+	च	=	च्)
उत्	+	डयन	=	उड्डयन	(त्	+	ड	=	ड्)
सत्	+	जन	=	सज्जन	(त्	+	ज	=	ज्)
तत्	+	टीका	=	तट्टिका	(त्	+	ट	=	ट्)
तत्	+	लीन	=	तल्लीन	(त्	+	ल	=	ल्)

यदि **'त'** के बाद **'श'** आए, तो **'त'** का **'च्'** और **'श'** का **'छ'** बनता है; जैसे–

तत्	+	शिव	=	तच्छिव	(त्	+	श	=	च्छ)
उत्	+	शिष्ट	=	उच्छिष्ट	(त्	+	श	=	च्छ)

यदि **'त्'** के बाद **'ह'** व्यंजन आता है तो **'त्'** का **'द्'** तथा **'ह'** का **'ध'** बन जाता है; जैसे–

उत्	+	हार	=	उद्धार	(त्	+	ह	=	द्ध)
उत्	+	हरण	=	उद्धरण	(त्	+	ह	=	द्ध)

(घ) ऋ, र, ष के बाद दूसरे शब्द में यदि **'न'** आए, तो वह **'ण'** बन जाता है; जैसे–

भूष	+	न	=	भूषण	(ष	+	न	=	ण)
परि	+	नाम	=	परिणाम	(र	+	न	=	ण)

(ङ) 'म्' संबंधी नियम– 'म्' के पश्चात **'क'** से **'म'** तक का कोई भी व्यंजन आ जाए, तो **'म्'** उस व्यंजन के पाँचवें वर्ण **(ङ्, ञ्, ण्, न्, म्)** में परिवर्तित हो जाता है; जैसे–

सम्	+	तोष	=	संतोष	(म्	+	त	=	न्)
सम्	+	भव	=	संभव	(म्	+	भ	=	म्)
सम्	+	पूर्ण	=	संपूर्ण	(म्	+	प	=	म्)
अहम्	+	कार	=	अहङ्कार (अहंकार)	(म्	+	क	=	ङ्क)
सम्	+	चय	=	संचय	(म्	+	च	=	ञ्)

3. विसर्ग संधि

विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन आने पर उनके मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे **विसर्ग संधि** कहते हैं; जैसे–

पुनः + जन्म = पुनर्जन्म निः + काम = निष्काम

Scanned with CamScanner

विसर्ग संधि के नियम

(क) विसर्ग का 'ओ' में परिवर्तन– यदि विसर्ग से पहले **'अ'** हो और विसर्ग का मेल **'अ'** या किसी भी वर्ग के तीसरे चौथे, पाँचवें वर्ण अथवा **य्, र्, ल्, व्, ह्** से हो, तो विसर्ग **'ओ'** में बदल जाता है; जैसे–

मनः + बल = मनोबल मनः + हर = मनोहर

मनः + रथ = मनोरथ यशः + दा = यशोदा

(ख) विसर्ग का 'र्' में परिवर्तन– यदि विसर्ग से पहले 'अ', 'आ' से अलग कोई स्वर हो और विसर्ग का मेल किसी स्वर किसी वर्ग के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण या **य्, र्, ल्, व्, ह्** से हो, तो विसर्ग परिवर्तित होकर **'र्'** हो जाता है; जैसे–

निः + जल = निर्जल निः + आशा = निराशा

दुः + जन = दुर्जन निः + उत्तर = निरुत्तर

(ग) विसर्ग का 'श्' में परिवर्तन– यदि विसर्ग से पहले कोई स्वर हो और उसका मेल **च, छ, श** से हो, तो विसर्ग 'श्' में परिवर्तित हो जाता है; जैसे–

दुः + चरित्र = दुश्चरित्र हरिः + चंद्र = हरिश्चंद्र

निः + छल = निश्छल निः + चय = निश्चय

(घ) विसर्ग का 'स्' में परिवर्तन– यदि विसर्ग का मेल **'त', 'स'** से हो, तो विसर्ग **'स्'** में परिवर्तित हो जाता है; जैसे–

नमः + ते = नमस्ते निः + तेज = निस्तेज

निः + संतान = निस्संतान निः + सहाय = निस्सहाय

(ङ) विसर्ग का 'ष्' में परिवर्तन– यदि किसी विसर्ग से पहले **'इ', 'उ'** हो और विसर्ग का मेल **क्, ख्, ट्, ठ्, प्, फ्** हो तो विसर्ग **'ष'** में परिवर्तित हो जाता है; जैसे–

निः + पाप = निष्पाप दुः + परिणाम = दुष्परिणाम

दुः + कर = दुष्कर निः + फल = निष्फल

(च) विसर्ग का लोप होना– 1. यदि विसर्ग का मेल **'र्'** से हो तो विसर्ग लुप्त हो जाता है। विसर्ग का पहला स्वर दीर्घ हो जाता है; जैसे– निः + रोग = नीरोग निः + रज = नीरज

1. यदि विसर्ग से पहले 'अ', 'आ' हो और विसर्ग का मेल किसी अन्य स्वर से हो, तो विसर्ग लुप्त हो जाता है; जैसे–

ततः + एव = ततएव अतः + एव = अतएव

(छ) विसर्ग में परिवर्तन न होना– यदि विसर्ग से पहले 'अ' हो और विसर्ग का मेल 'क्' या 'प्' से हो, तो विसर्ग परिवर्तन नहीं होता है; जैसे– प्रातः + काल = प्रातःकाल अधः + पतन = अधःपतन

आओ पाठ दोहराएँ

कौशल-पठन (उच्चारण, अर्थबोध-भाषण)

- संधि का सामान्य अर्थ है –मेल।
- दो वर्णों के परस्पर मेल से जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे **संधि** कहते हैं।
- संधि युक्त शब्दों को अलग करने की विधि **संधि-विच्छेद** कहलाती है।
- संधि के तीन भेद होते हैं– 1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि
- स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं– 1. दीर्घ संधि 2. गुण संधि 3. वृद्धि संधि 4. यण संधि 5. अयादि संधि

Scanned with CamScanner

अभ्यास

मौखिक

कौशल-वाचन (बोध, संवाद)

1. संधि का शाब्दिक अर्थ क्या है?
2. स्वर संधि किसे कहते हैं?

लिखित

कौशल-लेखन (व्याकरण, शब्दावली, लिखावट)

1. निम्नलिखित शब्दों के उचित संधि-विच्छेद पर ✓ निशान लगाइए-

(क) महोत्सव	=	महा + उत्सव ☐	महो + उत्सव ☐	मह + उत्सव ☐
(ख) गणेश	=	गण + ऐश ☐	गण + ईश ☐	गणो + ईश ☐
(ग) सज्जन	=	सज् + जन ☐	सत्त् + जन् ☐	सत् + जन ☐
(घ) संतोष	=	सन् + तोष ☐	सम् + तोष ☐	स + तोष ☐
(ङ) स्वागत	=	स्व + आगत ☐	सु + आगत ☐	स्व + गत ☐

2. निम्नलिखित शब्दों को संधि के अनुसार उनके शीर्षक तक पहुँचाइए-

रवींद्र नमस्ते संचय निष्पाप राजेश उल्लेख वागीश भावुक ततएव

स्वर संधि	व्यंजन संधि	विसर्ग संधि
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....

3. संधि-विच्छेद कीजिए तथा उनके उचित भेद पर ✓ निशान लगाइए-

		संधि-विच्छेद	संधि के नाम	
(क) रवींद्र	=	..... + ...	दीर्घ संधि ☐	गुण संधि ☐
(ख) महर्षि	=	..... + ...	गुण संधि ☐	वृद्धि संधि ☐
(ग) महात्मा	=	..... + ...	यण संधि ☐	दीर्घ संधि ☐
(घ) गायक	=	..... + ...	गुण संधि ☐	अयादि संधि ☐
(ङ) न्यून	=	..... + ...	वृद्धि संधि ☐	यण संधि ☐
(च) मतैक्य	=	..... + ...	वृद्धि संधि ☐	यण संधि ☐

4. निम्नलिखित संधि-विच्छेद की संधि कीजिए-

हिम + आलय	=	.....	भोजन + आलय	=	.....
निः + संदेह	=	.....	प्रति + एक	=	.....
विद्या + आलय	=	.....	धर्म + आत्मा	=	.....
सदा + एव	=	.....	दुः + परिणाम	=	.....

Scanned with CamScanner

5. निम्नलिखित शब्दों की संधि करके नए शब्द बनाइए-

देव, सप्त, महा, राज → ऋषि

....

राज, ज्ञान, धर्म, वीर → इंद्र

....

6. निम्नलिखित शब्दों की संधि-विच्छेद कीजिए तथा उनके भेद भी लिखिए-

	संधि-विच्छेद	भेद
तल्लीन –	.....	.....
यथार्थ –	.....	.....
अभीष्ट –	.....	.....
संकल्प –	.....	.....
वधूत्सव –	.....	.....
लोकोक्ति –	.....	.....

	संधि-विच्छेद	भेद
जगदीश –	.....	.....
न्यायालय –	.....	.....
शिक्षार्थी –	.....	.....
स्वागत –	.....	.....
परोपकार –	.....	.....
निश्चय –	.....	.....

7. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) संधि किसे कहते हैं? उदाहरण सहित बताइए।

(ख) व्यंजन संधि किसे कहते हैं? उदाहरण सहित बताइए।

8. आपकी माँ और आपके दोस्त की माँ के बीच किसी बात को लेकर विच्छेद यानी अलगाव हो गया है। उनकी दोबारा से संधि कराने यानी मेल कराने के लिए आप क्या करेंगे?

मूल्यपरक प्रश्न

गतिविधि

रचनात्मक-लेखन (विचार, भाव, लिखावट)

- दिए गए उदाहरण की सहायता से शब्द के अंतिम वर्ण से कोई शब्द लिखिए और उसके नीचे उसी शब्द का संधि-विच्छेद कीजिए तथा इस संधि और संधि-विच्छेद की सीढ़ी को आगे बढ़ाइए।
(लिखने वाले शब्दों की न्यूनतम सीमा आठ है और अधिक-से-अधिक आप कितने भी शब्द संधि-विच्छेद करके लिख सकते हैं।)

सदाचार → रवीश → श..... → ..... → ..... → .....

(सत् + आचार) (रवि + ईश) (..... + ...) (..... + ...) (..... + ...) (..... + ...)

..... → ..... → ..... → .....

(..... + ...) (..... + ...) (..... + ...) (..... + ...)

Scanned with CamScanner